इकाई 23 रिश्ते-नाते की शब्दावली

इकाई की रूपरेखा

23.0 उद्देश्य
23.1 प्रस्तावना
23.2 परिवार और समाज की संकल्पना
    23.2.1 पारिवारिक और सामाजिक संरचना
    23.2.2 परिवार की संरचना और रिश्ते-नाते के शब्द
23.3 हिंदी के रिश्ते-नाते की शब्दावली
    23.3.1 हिंदी में मूलभूत रिश्ते-नाते तथा शब्द प्रयोग
    23.3.2 हिंदी के रिश्ते-नाते की शब्दावली का सामाजिक संदर्भ
23.4 हिंदी के रिश्ते-नाते की शब्दावली की सांस्कृतिक संरचना
    23.4.1 संस्कार, पर्व और रिश्ते-नाते
    23.4.2 रिश्ते-नाते और सामाजिक आचरण
23.5 रिश्ते-नाते के शब्दों का संबोधन रूप में प्रयोग
    23.5.1 रिश्ते-नाते और संबोधन का सामाजिक संदर्भ
    23.5.2 देवी-देवताओं के लिए रिश्ते-नाते की शब्दावली का संबोधन रूप में प्रयोग
23.6 सारांश
23.7 शब्दावली
23.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें
23.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

23.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप :

- परिवार की संरचना को सामाजिक संरचना से जोड़ सकेंगे,
- सामाजिक संरचना को अभिव्यक्त करने वाले रिश्ते-नाते की शब्दावली का विश्लेषण कर सकेंगे,
- विभिन्न भाषाओं में रिश्ते-नाते की शब्दावली के प्रति सामाजिक दृष्टिकोण को समझा सकेंगे,
- रिश्ते-नाते की शब्दावली को वर्गीकृत कर सकेंगे,
- यह भी समझा सकेंगे कि यह वर्ग-भेद रिश्ते-नातों से जुड़े भाषा प्रयोग को किस रूप में प्रभावित करता है,
- विभिन्न संबंधों के बीच औपचारिक-अनौपचारिक, प्रगाढ़ तथा आत्मीय संबंधों के सामाजिक नियम या व्यवस्था को स्पष्ट कर सकेंगे,
- रिश्ते-नाते की शब्दावली किस प्रकार भाषा प्रयोग को प्रभावित करती है — इसका भी परिचय दे सकेंगे,
- रिश्ते-नाते की शब्दावली की सांस्कृतिक संरचना पर भी प्रकाश डाल सकेंगे और इसी संदर्भ में उन्हें संस्कार, पर्वों तथा सामाजिक आचरण से जोड़ सकेंगे,
- रिश्ते-नाते के शब्दों का संबोधन शब्दावली के रूप में किए जाने वाले प्रयोगों की भी चर्चा कर सकेंगे तथा उनका सामाजिक संदर्भ समझा सकेंगे।

23.1 प्रस्तावना

परिवार, व्यक्ति के समाजीकरण का पहला चरण कहा जा सकता है। सामाजिक नातों के प्रति जो समाज जितना ही जागरूक होता है उस समाज में रिश्ते-नाते की शब्दावली उतनी ही स्पष्ट और व्यापक होती

है। इस दृष्टि से ही हिंदी भाषा के पास लगभग सभी नातों के लिए भिन्न शब्द हैं जबकि अंग्रेज़ी भाषा एक ही शब्द के माध्यम से कई नातों को व्यक्त करने के लिए मजबूर है।

रिश्ते-नाते के शब्द सामाजिक संरचना को व्यक्त करते हैं, यह एक सच्चाई है। परंतु, रिश्ते-नाते की शब्दावली जब संबोधन के रूप में प्रयुक्त होती है तो यह सिद्ध होने लगता है कि समाज कितनी गहराई से एकता के सूत्र में आबद्ध है।

विभिन्न नातों के प्रति समाज का आचरण या व्यवहार रिश्ते-नाते की शब्दावली को सामाजिक अर्थ प्रदान करता है। मूल परिवार, माता-पिता के परिवार और वैवाहिक संबंधों से निर्मित रिश्ते अनेक सामाजिक अर्थों को खोलने के साथ-साथ सामाजिक संरचना की अनेक पर्तों को भी खोलते चलते हैं।

हिंदी की रिश्ते-नाते की शब्दावली हमारे समाज और हमारी संस्कृति को व्यक्त करने का एक सशक्त साधन है। यह बात तब और स्पष्ट होती है जब हम इसकी तुलना अंग्रेज़ी भाषा की रिश्ते-नाते की शब्दावली से करते हैं।

हिंदी के रिश्ते-नाते की शब्दावली को जब हम सामाजिक संदर्भ में देखते हैं तो यह स्पष्ट होता है कि ये भाषा की संरचना पर भी अपना प्रभाव डालते हैं। यह भी स्पष्ट होता है कि भारतीय समाज के संस्कारों में भिन्न नातों की भिन्न भूमिका है। ये भूमिकाएँ स्पष्ट करती हैं कि रिश्ते-नाते हमारे जीवन और लोक की जड़ों तक कितने फैले हुए हैं।

रिश्ते-नाते की शब्दावली के अनेकों संदर्भ, प्रयोग और आयाम हैं। यह इकाई इन सभी पर प्रकाश डालेगी तथा प्रत्येक संदर्भ को स्पष्ट रूप से आपके समक्ष प्रस्तुत करेगी।

23.2 परिवार और समाज की संकल्पना

समाज के प्रति हमारी जो धारणा सबसे पहले बनती है, वह परिवार में ही बनती है। जिस प्रकार समाज की संरचना स्तर-भेद से निर्मित होती है ठीक उसी प्रकार हमारे पारिवारिक संबंधों में भी स्तर-भेद रहता है। इस बात को और स्पष्ट किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, आप अपने परिवार में पीढ़ी के अंतर को पहचानते हैं। अपने से एक पीढ़ी ऊपर के व्यक्ति को आप उच्च सामाजिक स्तर प्रदान करते हैं और अपने से एक पीढ़ी नीचे के व्यक्ति को निम्न स्तर। पारिवारिक रिश्तों की यह पहचान और उनका स्तरीकरण हम बचपन से ही परिवार में करने लगते हैं। यह किसी भी भाषा-समुदाय के व्यक्ति का पहला समाजीकरण (सोशियलाइज़ेशन) है। हमारे जीवन में परिवार की महत्ता निरंतर बनी रहती है। परिवार के इस महत्व को देखते हुए हम यह भी कह सकते हैं कि परिवार, समाज की सबसे प्रबल और प्रभावशाली इकाई है। इतना ही नहीं हमारे सामाजिक जीवन, सामाजिक आचरण और भाषा-व्यवहार को भी यह इकाई निरंतर प्रभावित करती रहती है।

परिवार की सामाजिक इकाई के रूप में प्रतिष्ठा ने ही रिश्ते-नाते की व्यवस्था को भाषा का सार्वभौम (universal) लक्षण बना दिया है। इसका तात्पर्य यह है कि हर भाषा समाज में रिश्ते-नाते के शब्द अनिवार्य रूप से रहते हैं।

यह बात अलग है कि कुछ भाषाओं में यह व्यवस्था किसी दूसरी भाषा की तुलना में अधिक संपन्न और व्यापक हो सकती है। इस बात को हिंदी भाषा और अंग्रेज़ी भाषा के कुछ रिश्ते-नाते के शब्दों के उदाहरण द्वारा भी समझाया जा सकता है। अंग्रेज़ी में माता-पिता के भाई बहन के लिए, पिता के भाई या बहन की पत्नी/या पति के लिए और माता के भाई या बहन के पति/या पत्नी के लिए केवल दो रिश्ते-नाते के शब्द प्रयोग में लाए जाते हैं — "अंकल" और "आंटी" जबकि इन नातों को व्यक्त करने के लिए हिंदी भाषा में कई शब्दों का प्रचलन है जैसे, "अंकल" के संदर्भ में चाचा, मामा, मौसा, फूफा, ताऊ "आंटी" के संदर्भ में चाची, मामी, मौसी, बुआ, ताई आदि। अंग्रेज़ी भाषा-समाज और हिंदी भाषा-समाज में रिश्ते-नाते की शब्दावली की यह व्यवस्था स्पष्ट करती है कि हिंदी की रिश्ते-नाते की शब्दावली, अंग्रेज़ी की रिश्ते-नाते की शब्दावली की तुलना में अधिक संपन्न और व्यापक है। परंतु इस प्रकार की भिन्नता स्वाभाविक ही है क्योंकि हर भाषा का समाज और उसकी संस्कृति अपने

में विशिष्ट होती है। लेकिन एक स्तर पर सभी भाषाएँ रिश्ते-नाते के शब्दों को समान रूप से साधती हैं। यह तो हम साफ़ देख सकते हैं और आगे इसकी चर्चा भी करेंगे कि सभी भाषाओं में समस्त रिश्ते-नाते की शब्दावली का संगठन (organisation) और विश्लेषण (analysis) लिंग, आयु, पीढ़ी, रक्त-संबंध और विवाह-संबंध का उपयोग करते हुए ही किया जाता है।

यह देखने के लिए कि विभिन्न नातों के लिए कैसे कोई भिन्न-भिन्न शब्द अपनाता है, हम किसी से पूछ सकते हैं कि वह अपने पिता, माँ के भाई, माँ की बहन के पति के लिए किन शब्दों का प्रयो करता है। हम यह भी देख सकते हैं कि वह अलग से इन शब्दों का प्रयोग तो करेगा पर इन शब्दों के आर्थी-संगठन (semantic organisation) से सर्वथा अनभिज्ञ रहते हुए। इसका कारण यही है कि परिवार और समाज में हम रिश्ते-नाते के शब्दों को तो जान-पहचान लेते हैं और उनका प्रयोग भी करते हैं परंतु उनके संगठन या उनकी सीमाओं की ओर हमारा ध्यान नहीं जाता। उदाहरण के लिए, यदि आप ध्यान दें तो पाएंगे कि अंग्रेज़ी भाषा में "माँ के पिता" और "पिता के पिता" दोनों के लिए एक ही शब्द 'grandfather' है।

स्पष्टतः प्रत्येक भाषा-समाज में पारिवारिक संरचना के आधार भिन्न होते हैं। इसीलिए प्रत्येक भाषा-सम रिश्ते-नाते के शब्दों का गठन अपनी विशिष्टता के अनुरूप करता है। फिर भी इसमें कोई संदेह न कि रिश्ते-नाते की शब्दावली भाषा और समाज को वर्गीकृत करने की मूलभूत व्यवस्था है जो पारिवारिक-संरचना के साथ-साथ सामाजिक-संरचना का परिचय भी हमें देती है।

23.2.1 पारिवारिक और सामाजिक संरचना

यह तो हम सभी जानते हैं कि भिन्न भाषा समाज भिन्न प्रकार से गठित होते हैं। पिछली इकाई में हमने यह भी देखा था कि समाज की संरचना उस समाज के भाषा-प्रयोग द्वारा भी व्यक्त होती है हमने यह भी पढ़ा था कि कई भाषेतर या सामाजिक उपादान हमारे भाषा-प्रयोग को नियंत्रित करते हैं। रिश्ते-नाते की शब्दावली के संदर्भ में भी इस सामाजिक संरचना को समझा जा सकता है। क्या आपने कभी सोचा है कि हिंदी में पिता के भाई के लिए आयु के आधार पर दो रिश्ते-नाते के शब्दों — "चाचा' और "ताऊ" — का प्रयोग क्यों होता है, जबकि माँ के भाई के लिए मात्र एक शब्द "मामा" का चाहे वह माँ से उम्र में बड़ा हो या छोटा। एकदम ऐसी ही स्थिति आपको पति के भाई के लिए प्रयुक्त रिश्ते-नाते के शब्द-प्रयोग में भी मिलती है — "जेठ" और "देवर"। जबकि पत्नी के भाई के लिए एक ही शब्द "साला" प्रयुक्त होता है। प्रयोग की ये स्थितियाँ सामाजिक संरचना का भी उद्घाटन कराती हैं कि भारतीय समाज मूलतः पुरुष प्रधान समाज है अतः पिता और पति से जुड़े रिश्तों को व्यापकता प्रदान की जाती है, माँ और पत्नी से जुड़े रिश्तों को यह व्यापकता प्रदान करने की आवश्यकता समाज अनुभव नहीं करता।

सामाजिक संरचना का ज्ञान हमें रिश्ते-नाते की शब्दावली के प्रयोग के माध्यम से भी होता है। इस प्रकार का प्रयोग हम-आप निरंतर अपने दैनिक जीवन में करते हैं। उदाहरण के लिए, रिश्ते-नाते के शब्दों द्वारा हम एक-दूसरे को संबोधित करते हैं। जब हम इन रिश्ते-नाते के शब्दों का प्रयोग संबोधन के रूप में करते हैं तो इनके चयन में आयु और सामाजिक स्थिति मुख्य घटक होते हैं। पिछली इकाई में भी यह संकेत दिया गया है कि हम एकदम अनजान व्यक्तियों को उनकी आयु और लिंग के अनुसार रिश्ते-नाते के शब्दों का प्रयोग करते हुए संबोधित करते हैं — दादा, मौसी, चाची, बुआ आदि ऐसे ही प्रचलित संबोधन हैं जिनका प्रयोग किसी भी व्यक्ति के लिए हमारा समाज करता है। यह तथ्य हमारी सामाजिक संरचना को साफ़-साफ़ व्यक्त करता है कि समाज में हम बड़े-बुज़ुर्गों को आदर देते हैं और इस आदर को व्यक्त करने के लिए उन्हें आदरणीय रिश्ते-नातों से जोड़कर बुलाते हैं। स्पष्ट ही अंग्रेज़ी के "मिस्टर" या "मैडम" द्वारा समाज का यह उदारवादी दृष्टिकोण व्यक्त नहीं होता। भारतीय समाज में बड़े-बुज़ुर्ग भी अपने से छोटों को बेटा, बेटी द्वारा संबोधित करते हैं। एक उम्र के लोग एक-दूसरे को "भैया" या "भाई साहब" द्वारा। यह इस बात का प्रमाण है कि भारतीय समाज अपनी संरचना में आत्मीय संबंधों को व्यक्त करता है। सामाजिक संरचना के साथ सामाजिक-वर्ग भेद अनिवार्यतः जुड़ा होता है। यदि इस वर्ग भेद को ध्यान में रखकर रिश्ते-नाते की शब्दावली के प्रयोग को देखा जाए तो सामाजिक संरचना का ढांचा उभरकर हमारे सामने आता है। हमारा समाज कुछ व्यवसायों को उच्च स्थान देता है जैसे डॉक्टर, अध्यापक, इंजीनियर आदि और कुछ को निम्न स्थान

देता है जैसे मोची, रिक्शा चालक आदि। मोची, भिखारी, रिक्शेवाले आदि उच्च वर्ग के व्यक्ति को "बाबूजी", "भइया" कहकर संबोधित करते हैं। यहाँ ये शब्द रिश्ते-नाते को नहीं, निम्न-वर्ग द्वारा उच्च-वर्ग को दिए गए आदर भाव को ही दर्शाते हैं।

भारतीय समाज की संरचना में जनता के बीच भी रिश्ते-नाते की शब्दावली का सार्वजनिक प्रयोग नेतागण करते हैं। आपने इस संदर्भ में "भाइयो और बहनो" का प्रयोग कई बार सुना भी होगा। "भाइयो और बहनो" वास्तव में अंग्रेज़ी के "लेडीज़ एण्ड जेन्टलमेन" (Ladies and Gentlemen) का स्थानापन्न है। इस प्रयोग द्वारा हम हिंदी-भाषी समाज और अंग्रेज़ी-भाषी समाज के संरचनागत भेद को स्पष्ट रूप में देख सकते हैं।

रिश्ते-नाते की शब्दावली सामाजिक संरचना के साथ-साथ उस भाषा-समाज की पारिवारिक संरचना को भी समझाने में समर्थ है। हम और आप भारतीय हैं अतः हम सभी यह जानते हैं कि भारतीय समाज आज भी संयुक्त परिवार की संकल्पना से जुड़ा हुआ समाज है। जबकि पाश्चात्य समाज संयुक्त परिवार की संकल्पना में विश्वास नहीं करता। यही कारण है कि भारतीय भाषाओं में हमें प्रत्येक रिश्ते के लिए अलग शब्द मिल जाते हैं, पाश्चात्य भाषाओं में नहीं। इस बात को भी हिंदी और अंग्रेज़ी भाषा की रिश्ते-नाते की शब्दावली के उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया जा सकता है। हिंदी में बहनोई, साला, जेठ, देवर, साढ़ू भिन्न नातों के लिए भिन्न शब्द हैं जबकि अंग्रेज़ी में इन सभी नातों के लिए मात्र एक शब्द "ब्रदर-इन-लॉ" (Brother-in-law) है। यह भेद दोनों भाषा-समाजों की भिन्न पारिवारिक संरचना का परिचय हमें देता है। एक समाज परिवार के सभी रिश्तों को समान महत्व देता है अतः उन्हें भिन्न शब्दावली प्रदान करता है। जबकि दूसरा रिश्तों को "मुख्य" और "गौण" की दो श्रेणियों में बाँटकर देखता है। मुख्य नातों के लिए तो वह भिन्न शब्दावली प्रदान करता है लेकिन गौण नातों के लिए ऐसा करने की आवश्यकता महसूस नहीं करता।

भाषा-समाज में पारिवारिक संरचना का परिचय हमें रिश्ते-नातों के प्रति भाषा-समाज की धारणा से भी मिलता है। हिंदी भाषा-समाज इस दृष्टि से रिश्ते-नातों को आदरणीय, आत्मीय, मधुर जैसी श्रेणियों में बाँटकर देखता है। आप खुद देखिए कि अपने से एक पीढ़ी ऊपर के रिश्ते हमारे लिए स्वतः आदरणीय बन जाते हैं। दादा, नाना, पिता, चाचा आदि ऐसे ही रिश्ते हैं। यदि हम इन्हें संबोधित भी करते हैं तो इनके साथ आदरसूचक संबोधन "जी" जोड़ते हैं। हिंदी भाषी परिवार में "बेटी के पति" या "दामाद" को पर्याप्त आदर देने की परंपरा है। अतः बेटी के माता-पिता भी यदि उसे संबोधित करते हैं तो उसके नाम के साथ "बाबू" या "जी" लगाते हैं। अन्यथा इनके लिए "जमाई बाबू" या "पाहुन" का प्रयोग किया जाता है।

इसी प्रकार देवर-भाभी, जीजा-साली के बीच मधुर संबंधों को भी हिंदी भाषी परिवार स्वीकृति प्रदान करता है। आपने अपने परिवारों में भी देखा होगा कि होली के अवसर पर ये दोनों एक-दूसरे से हँसी-मज़ाक या छेड़छाड़ करते हैं। जबकि पति के बड़े भाई अर्थात् जेठ के साथ पारिवारि[illegible] आदरणीय होते हैं तथा जेठ के सामने पर्दा प्रथा का निर्वाह करने की परंपरा भी है। मौसी से हमारे पारिवारिक संबंध अति-आत्मीय होते हैं। हमारे परिवारों में मौसी को "माँ के समान" समझा जाता है, बुआ अर्थात् पिता की बहन से हमारे संबंध औपचारिक ही होते हैं। इसी प्रकार चाची या ताई की तुलना में मामी से हमारे संबंध अधिक मधुर और अनौपचारिक होते हैं। अतः रिश्ते-नाते के शब्द केवल हमारे नातों को व्यक्त करने वाले शब्द-मात्र नहीं हैं। इनके द्वारा भाषा-समाज और परिवार की संरचना भी उभरकर हमारे सामने आती है। सामाजिक और पारिवारिक संगठन में रिश्ते-नाते की शब्दावली के महत्व पर N.W. Thomas (1966) और M. Titib (1967) ने विस्तार से अध्ययन किया है। इन दोनों ने भिन्न समाजों में भिन्न पारिवारिक संरचना के संदर्भ में रिश्ते-नाते की शब्दावली पर सैद्धांतिक चर्चा की। इन्ह विचारों को संक्षेप में आगे आपके सामने रखा जा सकता है।

23.2.2 परिवार की संरचना और रिश्ते-नाते के शब्द

विश्व के हर समाज में मूलतः दो प्रकार की पारिवारिक संरचना मिलती है — 1) संयुक्त परिवार; और 2) सीमित परिवार। संयुक्त परिवार हम उस परिवार को कह सकते हैं जिसमें दो-तीन पीढ़ियों

के सदस्य एक साथ रहते हों। इस दृष्टि से हिंदी भाषी-समाज में परिवार की संरचना संयुक्त परिवार की संरचना है। इस परिवार में दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, चाची, भाई, भतीजे, भतीजियाँ, बहनें — सब एक साथ रहते हैं। इसके विपरीत सीमित परिवार की संकल्पना पति, पत्नी और उनके बच्चों तक ही अपने को सीमित रखती है। सीमित परिवार में माता-पिता के लिए भी स्थान नहीं होता। पाश्चात्य देशों में पारिवारिक संरचना सीमित परिवार को ही महत्व देती है। महानगरीय विकास और आधुनिकीकरण के कारण रोज़गार के अवसर व्यापक क्षेत्र में फैले हुए हैं। इसके परिणामस्वरूप भारत में भी संयुक्त परिवार टूट रहे हैं और सीमित परिवार अस्तित्व में आ रहे हैं। परंतु ऐसी स्थिति अभी महानगरों या बड़े शहरों तक ही सीमित है। गाँवों, कस्बों और छोटे शहरों में अभी भी संयुक्त परिवार की स्थिति को स्थान दिया जाता है।

जो भाषाएँ संयुक्त-परिवार वाली संरचना से जुड़ी हैं उनकी रिश्ते-नाते की शब्दावली सीमित परिवार वाली संरचना से भिन्न होती है। संयुक्त परिवार की संकल्पना से जुड़ी भाषाओं में रिश्ते-नाते के शब्दों की संख्या अधिक होती है। इसके कारण का संकेत पहले भी दिया गया कि ये भाषाएँ प्रत्येक रिश्ते को महत्व देती हैं और इसीलिए हर रिश्ते के लिए शब्द निर्मित करती हैं। जबकि इसके विपरीत सीमित-परिवार को मानने वाले समाज की भाषाओं में रिश्ते-नाते की शब्दावली की संख्या अपेक्षाकृत कम होती है, क्योंकि इनमें कुछ रिश्तों को ही परिवार या समाज प्रमुखता देता है, अन्य को नहीं। इस प्रकार एक ओर हमें "व्यापक" और दूसरी ओर "सीमित" रिश्ते-नाते के शब्द मिलते हैं।

भिन्न भाषाओं में भिन्न पारिवारिक संरचना उनके रिश्ते-नाते के शब्दों को व्यापक या सीमित बनाती हैं क्योंकि प्रत्येक समाज में पारिवारिक संरचना समान नहीं होती। इसलिए हर समाज की रिश्ते-नाते की शब्दावली भी एक-सी नहीं होती। यही कारण है कि एक ओर हमें हिंदी जैसी भाषा के रिश्ते-नाते के शब्दों के आधार पर हिंदी भाषा-समाज के पारिवारिक संबंधों को स्पष्ट रूप से समझने में आसानी होती है, तो दूसरी ओर अंग्रेज़ी जैसी भाषा के रिश्ते-नाते के शब्दों के आधार पर अंग्रेज़ी-भाषा-समाज के पारिवारिक संबंधों का मात्र अनुमान ही लगाया जा सकता है।

जैसा कि पहले भी चर्चा की गई है कि पाश्चात्य देशों में संयुक्त परिवार की परंपरा न होने का प्रभाव उनकी भाषा पर भी पड़ा है और इसीलिए इन भाषाओं में अलग-अलग संबंधों और संबंधियों के लिए अलग-अलग नामों की आवश्यकता नहीं पड़ती है। जबकि भारतीय समाज की पारिवारिक संरचना में अलग-अलग संबंधों और संबंधियों को विशिष्ट और भिन्न नामों से न पहचानने को संबंधों का अपमान माना जाता है। यही कारण है कि अंग्रेज़ी भाषा की सीमित रिश्ते-नाते की शब्दावली कई-कई नातों या संबंधों तथा संबंधियों को मिलाकर समावेशी शब्द (cover term) से काम चला लेती है। जबकि हिंदी में समावेशी शब्द नहीं हैं, हर नाते के लिए अलग-अलग शब्द हैं। इस स्थिति को नीचे दिए गए अंग्रेज़ी-हिंदी रिश्ते-नाते की शब्दावली से तुलना करके देखिए तो ऊपर की गई चर्चा और स्पष्ट हो जाएगी :

अंग्रेज़ी में समावेशी शब्द	**हिंदी में अलग-अलग शब्द**
1) ग्रैंडफादर (grandfather)	1) दादा, नाना
2) ग्रैंडडॉटर (granddaughter)	2) पोती, नातिन
3) सिस्टर-इन-लॉ (sister-in-law)	3) ननद, साली, भाभी, जेठानी, देवरानी, सलहज
4) कज़िन (cousin)	4) चचेरा/फुफेरा/मौसेरा/ममेरा भाई चचेरी/फुफेरी/मौसेरी/ममेरी बहन
5) नेफ्यू (nephew)	5) भतीजा, भांजा

इस प्रकार रिश्ते-नाते की शब्दावली अपनी संरचना और बुनावट में भिन्न भाषा और भिन्न संस्कृतियों में भिन्न-भिन्न होती है। परंतु हमें यह भी ध्यान देना चाहिए कि सभी भाषाओं में पारिवारिक संरचना के कुछ धरातल समान होते हैं। अतः भिन्न भाषाओं में प्रयुक्त रिश्ते-नाते की शब्दावली में कुछ शब्दावली सभी भाषाओं में समान होती है जिसे हम सार्वभौमिक रिश्ते-नाते की शब्दावली कह सकते हैं। यह शब्दावली भाषा-निरपेक्ष होती है और सभी भाषाओं में जो मूलभूत नाते होते हैं उन्हें व्यक्त करती है। इस सार्वभौमिक शब्दावली को अंग्रेज़ी भाषा में कुछ प्रतीकों द्वारा निर्धारित भी कर दिया

गया है जैसे — F–फ़ादर, M–मदर, B–ब्रदर, S–सिस्टर, S–सन, D–डॉटर, H–हस्बैंड, W–वाइफ़। इसमें कोई संदेह नहीं कि विश्व की सभी भाषाओं में ये मूलभूत नाते और इनके लिए शब्द उपलब्ध हैं। परंतु व्यावहारिक स्तर पर इन नातों को व्यक्त करने के लिए भिन्न भाषाएँ भिन्न शब्दों का प्रयोग करती हैं। उदाहरण के लिए, हिंदी में "पिता" के लिए पिताजी, बाबूजी, बापू, पापा का प्रचलन है तो "माता" के लिए माताजी, माँ, अम्मा, माई का। इसी प्रकार हिंदी में अंग्रेज़ी नाते Father-in-law की समतुल्य शब्दावली "ससुर" है पर व्यावहारिक अभिव्यक्ति के स्तर पर यह भी पिताजी, बाबूजी या पापा के रूप में दिखाई देती है। इसी प्रकार "बहन" के लिए दीदी, जीजी, जिज्जी, "भाई" के लिए दादा, भैया, भाई साहब व्यावहारिक स्तर पर प्रयुक्त शब्द हैं, जो सार्वभौमिक नहीं हैं।

23.3 हिंदी के रिश्ते-नाते की शब्दावली

जैसा कि हमने अभी देखा कि हिंदी भाषा में भिन्न नातों के लिए भिन्न शब्द हमें मिलते हैं। ये शब्द मूल रिश्ते-नातों को साफ़-साफ़ व्यक्त करते हैं। अंग्रेज़ी की शब्दावली में ऐसा नहीं है। अतः वहाँ नाते के एक शब्द से जुड़े रिश्तों के अस्तित्व को समझने के लिए नाते के शब्द को निम्नलिखित ढंग से समझाना पड़ता है :

अंकल$_1$ = FB = फ़ादर्स ब्रदर (पिता का भाई)
अंकल$_2$ = MB = मदर्स ब्रदर (माता का भाई)
अंकल$_3$ = FSH = फ़ादर्स सिस्टर्स हस्बैंड (पिता की बहन का पति)
अंकल$_4$ = MSH = मदर्स सिस्टर्स हस्बैंड (माता की बहन का पति)

जबकि हिंदी में "अंकल" के इन चारों रिश्तों का संदर्भ क्रमशः चाचा/ताऊ, मामा, फूफा, मौसा जैसे **शब्दों द्वारा स्पष्ट होता है। हिंदी के रिश्ते-नाते की शब्दावली अपनी प्रकृति में व्यापक है इसीलिए इसे** समझने के लिए हमें इसे तीन भिन्न धरातलों पर रखकर विश्लेषित करना चाहिए। यहाँ हम दो शब्दों का प्रयोग करेंगे — i) ईगो; और ii) आल्टर। **"ईगो" शब्द वह है जिसके माध्यम से रिश्तेदारी का बोध होता है** और **"आल्टर" वह है जो रिश्ते-नाते के शब्द द्वारा अभिव्यक्त होता है।** उदाहरण के लिए, यदि हम कहें कि "मोहन की चाची" तो यहाँ मोहन "ईगो" है और चाची "आल्टर"। इस प्रकार के विश्लेषण में "ईगो" लिंग निरपेक्ष होता है अर्थात् वह पुरुष भी हो सकता है और स्त्री भी। इस ईगो को केंद्र में रखकर हिंदी की रिश्ते-नाते की शब्दावली को निम्नलिखित तीन धरातलों पर विश्लेषित किया जा सकता है :

1) मूल परिवार से सम्बद्ध रिश्ते-नाते की शब्दावली;
2) पिता और माता के परिवारों से सम्बद्ध रिश्ते-नाते की शब्दावली; तथा
3) वैवाहिक रिश्तों से सम्बद्ध रिश्ते-नाते की शब्दावली

23.3.1 हिंदी में मूलभूत रिश्ते-नाते तथा शब्द-प्रयोग

पहले धरातल पर हिंदी के रिश्ते-नाते की शब्दावली का विश्लेषण करने के साथ ही यह कल्पना कीजिए कि केंद्र में "ईगो" है (स्त्री या पुरुष)। उससे एक पीढ़ी ऊपर माता और पिता हैं तथा दो पीढ़ी ऊपर दादा और दादी। "ईगो" से एक या एक से अधिक पीढ़ी ऊपर के रिश्तों को हम आदर देते हैं, इनके साथ "जी" का प्रयोग करते हैं और इनके स्थान पर सदैव मध्यम पुरुष सर्वनाम "आप" और अन्य पुरुष सर्वनाम "वे" का प्रयोग करते हैं। इस संदर्भ में नीचे दिए गए वाक्य देखिए :

1) पिता जी बाज़ार जा रहे हैं।
2) दादा जी बीमार हैं।
3) दादी जी हरिद्वार गई हैं।

1) पिता जी घर पर नहीं हैं/वे पाँच बजे वापस आएँगे।
2) दादा जी बीमार हैं/वे आजकल टहलने नहीं जाते।
3) माता जी नहा रही हैं/वे मंदिर जाने वाली हैं।

एक पीढ़ी ऊपर के इन रिश्ते-नातों को सामाजिक दृष्टि से (+पीढ़ी) का स्थान दिया जा सकता है। इन रिश्ते-नातों के शब्द और इन्हें पुकारने की शब्दावली में कहीं विकल्प हैं और कहीं नहीं। पहले भी आपने देखा कि "माता" और "पिता" को पुकारने के एकाधिक विकल्प हिंदी में उपलब्ध हैं। दादा और दादी रिश्ते-नाते के शब्द भी हैं और पुकारने के माध्यम भी। कहीं-कहीं "दादा" के लिए "बाबा" का विकल्प भी पुकारने के संदर्भ में मिलता है।

मूल परिवार से सम्बद्ध रिश्ते-नाते की हिंदी शब्दावली का दूसरा स्तर "ईगो" की समकक्ष पीढ़ी का है। अर्थात् ये एक ही पीढ़ी के रिश्ते-नाते होते हैं,"ईगो" की पीढ़ी और उससे संबंधित रिश्तों की पीढ़ी में कोई अंतर नहीं होता। अतः इन्हें (±पीढ़ी) या समान पीढ़ी के रिश्ते-नाते कहा जा सकता है। इस धरातल पर "भाई" और "बहन" दो रिश्ते रखे जा सकते हैं। इन दोनों को पुकारने के एक से अधिक विकल्प हिंदी में हैं, जिनकी चर्चा पहले की जा चुकी है।

मूल परिवार से सम्बद्ध रिश्ते-नाते की शब्दावली का तीसरा धरातल "ईगो" से एक या एकाधिक पीढ़ी नीचे के रिश्ते-नाते से जुड़ा है। इन्हें (-पीढ़ी) से जुड़े रिश्ते भी आप कह सकते हैं। बेटा, बेटी, पोता, पोती, नाती, नातिन इसी श्रेणी के रिश्ते-नाते के शब्द हैं। इन्हें पुकारने के लिए साधारणतः इनका प्रथम नाम "ईगो" लेता है जैसे मोहन, शीला आदि। (+पीढ़ी) की भांति इनके साथ आ ा भाव भाषा व्यक्त नहीं करती। अर्थात् इनके साथ "जी" का प्रयोग भी नहीं होता और "ः के स्थान पर मध्यम पुरुष सर्वनाम "तुम" का प्रयोग होता है। अतः (+पीढ़ी) के रिश्तों की भांति ाथ संबंधित वाक्य रचना में बहुवचन क्रिया का प्रयोग नहीं होता, क्रिया सदैव एकवचन रूप रहती है। इस संदर्भ में नीचे दिए गए कुछ वाक्य देखिए :

1) मेरा बेटा दिल्ली गया है।
2) मेरा पोता अब स्कूल जाने लगा है।
3) मेरी बेटी पाँचवी कक्षा में पढ़ती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि मूल-परिवार के रिश्ते-नाते के शब्द (+पीढ़ी), (±पीढ़ी) और (–पीढ़ी) में वर्गीकृत किए जा सकते हैं। पीढ़ी के ही आधार पर इन रिश्तों को सामाजिक पद भी समाज प्रदान करता है। (+ पीढ़ी) वाले रिश्तों को (+पद), (±पीढ़ी) वाले रिश्तों को (± या समान पद) तथा (–पीढ़ी) वाले रिश्तों को (–पद) समाज प्रदान करता है। इस वर्गीकृत सामाजिक स्थिति का बोध हमें इन रिश्तों के संदर्भ से जुड़े वाक्य-प्रयोगों द्वारा भी हो जाता है।

"ईगो" के माता-पिता के परिवारों से जुड़ कर कई नाते निर्मित होते हैं। इनके लिए हिंदी में अलग-अलग रिश्ते-नाते के शब्द उपलब्ध हैं। माता के परिवार के सदस्य "ईगो" के लिए कई नातों को जन्म देते हैं। माँ के माता-पिता ईगो के लिए नानी-नाना हैं, माँ का भाई और उसकी पत्नी मामा-मामी, माँ की बहन और उसका पति मौसी-मौसा। इन नातों के शब्दों और इन्हें पुकारने के शब्दों में कोई भेद नहीं है और ये सभी (+पीढ़ी) के शब्द हैं। मामा-मामी और मौसी-मौसा के बेटे-बेटियाँ ईगो के ममेरे-मौसेरे भाई तथा ममेरी-मौसेरी बहनें हैं। यह रिश्ता समान पीढ़ी का अर्थात् (±पीढ़ी) का द्योतक है। इन्हें पुकारने में आयु महत्वपूर्ण घटक होती है। अपने से बड़ी उम्र के ममेरे-मौसेरे भाई-बहनों के प्रथम नाम के साथ दादा या जीजी लगा दिया जाता है। कम आयु वालों को उनके प्रथम नाम से ही पुकारा जाता है।

पिता के माता-पिता "ईगो" के लिए दादी-दादा हैं। पिता के भाई के लिए आयु के आधार पर दो शब्द हिंदी में प्रचलित हैं। पिता के बड़े भाई "ताऊ" और पिता के छोटे भाई के लिए चाचा। इन दोनों की पत्नियाँ "ईगो" के लिए क्रमशः "ताई" और "चाची" हैं। पिता की बहन और उसका पति बुआ-फूफा हैं। पिता के भाई-बहनों के बेटे-बेटियाँ "ईगो" के लिए चचेरा/चचेरी और फुफेरा/फुफेरी भाई-बहनें हैं। इन्हें पुकारने की स्थिति ममेरे-मौसेरे भाई-बहनों के समान ही है। पिता के परिवार के (+पीढ़ी) रिश्तों में केवल बुआ को पुकारने के विकल्प मिलते हैं — बुआ, फूफी, फुआ। पिता के परिवार से संबंधित ये रिश्ते-नाते के शब्द भी (+पीढ़ी) और (±पीढ़ी) के अंतर्गत वर्गीकृत किए जा सकते हैं।

यहाँ यह भी ध्यान रखिए कि मामा-मामी और मौसा-मौसी के लिए "ईगो" भांजा/भांजी है तथा ताऊ/चाचा-ताई/चाची और बुआ-फूफा के लिए भतीजा/भतीजी। हमें यह भी ध्यान रखना चाहिए कि

भाइयों-बहनों, मौसी-बुआ, चाची-मामी आदि में आयु का भेद सदैव स्पष्ट और एक-सा नहीं रहता। उदाहरण के लिए "ईगो" और उसके मामा की आयु लगभग समान भी होती है और कभी-कभी मामा की उम्र कम भी हो सकती है। यही बात बुआ, मौसी, चाची, मामी के विषय में भी कही जा सकती है।

वैवाहिक संबंध से बने रिश्तों को देखने के लिए हमें "ईगो" की स्थिति को दो धरातलों पर रखकर विश्लेषित करना चाहिए। पहले धरातल पर "ईगो" पत्नी को माना जाए। इस स्थिति में पत्नी को पति के परिवार से मिले नाते और उनके लिए व्यवहार में लाए जाने वाले रिश्ते-नाते के शब्दों को आसानी से समझा जा सकता है। पत्नी के लिए पति के "माता-पिता, क्रमशः सास-ससुर हैं। पति के भाई के लिए आयु के आधार पर दो शब्द मिलते हैं — जेठ (पति का बड़ा भाई) और देवर (पति का छोटा भाई)। पति की बहन "ननद" है और उसका पति "ननदोई"। पति के चाचा, मामा, फूफा, मौसा पत्नी के लिए चचिया/ममिया/फुफिया/मौसिया ससुर हैं तो पति की चाची, मामी, मौसी, बुआ पत्नी के लिए चचिया, ममिया, मौसिया, फुफिया सास हैं।

दूसरे धरातल पर यदि पति को "ईगो" माना जाए तो पत्नी के माता-पिता पति के लिए सास-ससुर हैं। पत्नी का भाई "साला" और उसकी पत्नी "सलहज" तथा पत्नी की बहन "साली" और उसका पति "साढू"। पत्नी के चाचा, "चचिया/ममिया सास/ससुर" हैं।

वैवाहिक रिश्तों को पुकारने की स्थिति भिन्न है। सामान्यतः पति अपने परिवारजनों को जिस तरह पुकारता है पत्नी भी उसी तरह उन्हें पुकारती है। या जिस तरह पत्नी अपने परिवारजनों को पुकारती है उसी तरह पति भी उन्हें पुकारता है। उदाहरण के लिए, ससुर-सास को पिताजी, बाबूजी, माँ, अम्मा इत्यादि। यह भी ध्यान दें कि सास-ससुर के लिए बेटी का पति, "दामाद" है और बेटे की पत्नी "बहू"। इसी प्रकार, भाई की पत्नी "भाभी" है और बहन का पति "जीजा"। भाभी अपनी ननद को प्रथम नाम के साथ "दीदी" या "बीबी" लगाकर पुकारती है और देवर को प्रथम नाम के साथ "लाला" या "भैया" लगा कर।

तीनों धरातलों पर हिंदी के रिश्ते-नाते की शब्दावली समाज-संदर्भित है। हिंदी की रिश्ते-नाते की शब्दावली बहुत गहराई तक सामाजिक और सांस्कृतिक संरचना को व्यक्त करती है। प्रयोग के धरातल पर ये रिश्ते-नाते के शब्द अनजान व्यक्तियों के लिए भी प्रयुक्त होते हैं। मित्र की पत्नी या सहकर्मी की पत्नी के लिए "भाभीजी" का प्रयोग आप अपने आस-पास कभी भी सुन सकते हैं। यह भी आप देखते हैं कि "साला" और "ससुर" का प्रयोग गाली के रूप में भी होता है। "ससुर के ही समानांतर "ससुरी" का प्रयोग भी हमें मिलता है। इसी तरह "मामा" शब्द मज़ाक और व्यंग्य में प्रयुक्त होने लगा है।

रिश्ते-नाते की हिंदी शब्दावली के प्रयोग को अन्य दो रोचक स्तरों पर भी देखा जा सकता है। एक तो कुछ पशुओं को रिश्ते-नाते के शब्दों से हिंदी-भाषा-समाज ने बांधा है। बिल्ली (मौसी), बंदर (मामा) इसी प्रकार के प्रयोग हैं। दूसरे कुछ राष्ट्रीय नेताओं को उनकी व्यक्तिगत या राष्ट्रीय छवि के अनुरूप रिश्ते-नाते के शब्दों द्वारा इंगित किया जाता है, जैसे — महात्मा गांधी (बापू), जवाहरलाल नेहरू (चाचा), कस्तूरबा गांधी (बा), वारेरकर (मामा) आदि। अंग्रेज़ी में भी यह प्रवृत्ति है जैसे मदर टेरेसा, फ़ादर कामिल बुल्के, सिस्टर निवेदिता आदि।

हिंदी की रिश्ते-नाते की शब्दावली के प्रयोग की स्थिति इस धारणा को प्रमाणित करती है कि भाषा व्यक्ति और समाज की धरोहर होती है। परिवार, समाज की ही एक इकाई है इसलिए रिश्ते-नाते की शब्दावली भी विभिन्न विकल्पों और वैविध्य के साथ हिंदी में हमें दिखाई देती है। केवल शब्दावली और उसके प्रयोग के स्तर पर ही नहीं बल्कि व्याकरण के स्तर पर भी रिश्ते-नाते की शब्दावली का सामाजिक संदर्भ होता है।

23.3.2 हिंदी के रिश्ते-नाते की शब्दावली का सामाजिक संदर्भ

रिश्ते-नाते की शब्दावली के प्रयोग में भाषा-संरचना पर जो प्रभाव पड़ता है वह समाज संदर्भित है। इस पर चर्चा करने से पहले आइए नीचे दिए गए कुछ वाक्यों को ध्यान से देखें :

1) क) आज नाना आए थे।
   ख) आज नाती आया था।

*ग) आज नाना आया था।
*घ) आज नाती (एक) आए थे।

2) क) चाचा आज बाज़ार गए थे।
ख) भतीजा आज स्कूल नहीं गया।
*ग) चाचा आज बाज़ार गया था।
*घ) भतीजा आज स्कूल नहीं गए।

ऊपर दिए गए वाक्यों को देखने से यह स्पष्ट होता है कि "बहुवचन" के प्रयोग द्वारा आदर-सम्मान व्यक्त करने की स्थिति रिश्ते-नाते की शब्दावली के साथ भी जुड़ी है। ऊपर दिए गए (क) वाक्य इस बात को स्पष्ट भी करते हैं। रिश्ते-नातों के संबंध में यदि समाज की धारणा को या रिश्ते-नातों के लिए निर्धारित भाषा-व्यवहार के समाज संदर्भित नियमों को देखा जाए तो हिंदी की रिश्ते-नाते की शब्दावली का समाज से गहरा संबंध है। जैसा कि पहले भी संकेत दिया गया कि यदि हिंदी के रिश्ते-नाते के संबंधों को (+पद) में विभाजित किया जाए तो यह कहा जा सकता है कि हिंदी-भाषी समाज अपने से एक पीढ़ी ऊपर के व्यक्तियों को आदर या सम्मान की दृष्टि से देखता है। इसीलिए वह माता, पिता, चाचा, मामा, दादा, नाना आदि को (+पद) देता है। इसके विपरीत, यह समाज अपने से एक पीढ़ी नीचे के व्यक्तियों को (-पद) देता है। यह स्थिति ऊपर के (ख) वाक्यों में साफ़ दृष्टिगोचर भी होती है। (-पद) वाले रिश्तों में बेटा, बेटी, पोता, नाती, भतीजा, भांजा आदि आते हैं। यदि (+पद) वाले रिश्तों को आदर-सम्मान हेतु "बहुवचन" रूप न दिया जाए या (-पद) वाले रिश्तों को बहुवचन रूप दे दिया जाए तो सामाजिक दृष्टि से वाक्य "अशुद्ध" हो जाता है। इस संदर्भ में ऊपर के (ग) और (घ) वाक्यों को क्रमशः देखा जा सकता है।

इसके साथ ही हिंदी भाषा समाज (+पद) के रिश्तों के लिए भी भाषा-प्रयोग के समाज संदर्भित नियम निर्धारित करता है। जैसे यदि व्यक्ति का संबंध अपनी ही पीढ़ी के व्यक्तियों के साथ हो तो वह आयु (छोटा है या बड़ा) के आधार पर (+पद) या (-पद) पाता है। इसीलिए हिंदी-भाषी समाज में बड़ा भाई (+पद) पाता है और "आप" द्वारा संबोधित होता है और छोटा भाई (-पद) पाता है तथा "तुम" या "तू" द्वारा संबोधित किया जाता है। इसी प्रकार बड़े भाई की पत्नी/भाभी (+पद) और छोटे भाई की पत्नी/बहू (-पद) पाते हैं।

रिश्ते-नातों को सामाजिक पद-प्रतिष्ठा प्रदान करना और इस पद-प्रतिष्ठा के अनुरूप भाषा-प्रयोग के नियम निर्धारित करना समाज के कार्य हैं। समाज द्वारा निर्देशित नियमों की अवहेलना भाषा-प्रयोक्ता नहीं करता, कर भी नहीं सकता। क्योंकि ऐसा करने से उसके प्रयोग को सामाजिक स्वीकार्यता भी नहीं मिलेगी और उसका भाषा-प्रयोग हास्यास्पद बन जाएगा। भाषा कभी भी अपने समाज से कट कर नहीं रहती। सामाजिक मान्यताएँ और धारणाएँ भाषा द्वारा स्पष्टतः व्यक्त होती हैं। रिश्ते-नाते के शब्द केवल समाज पर ही नहीं, संस्कृति पर भी प्रकाश डालते हैं। सांस्कृतिक विरासत का पहला पाठ हम परिवार से ही सीखते हैं। परिवार के रीति-रिवाज़, संस्कार और कर्मकांड में भिन्न नातों की भिन्न और महत्वपूर्ण भूमिकाएँ होती हैं। आइए, हिंदी भाषा समाज में इन रिश्ते-नातों की सांस्कृतिक संबद्धता पर भी एक दृष्टि डालें।

अभ्यास 1

1) सही कथन के आगे (✓) तथा गलत कथन के आगे (×) का निशान लगाइए :
   i) परिवार समाज की एक प्रबल इकाई होती है।
   ii) हर भाषा में रिश्ते-नाते की शब्दावली की व्यवस्था समान होती है।
   iii) सामाजिक संरचना का ज्ञान हमें रिश्ते-नाते की शब्दावली के प्रयोग के आधार पर भी मिलता है।
   iv) सभी भाषाओं में पारिवारिक संरचना के कुछ धरातल समान होते हैं।
   v) रिश्ते-नाते की शब्दावली का केवल व्याकरण के स्तर पर ही विश्लेषण होता है।
   vi) रिश्ते-नाते की शब्दावली का भाषा संरचना पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

2) नीचे दी गई शब्द सूची में से शब्दों को छाँटकर दिए गए खाने में भरिए :

शब्द सूची

दादा, पिता, मामा, चाची,
ननद, जेठ, बहन, फूफा,
पोता, साली, मौसी, साढ़ू

क) मूल परिवार से संबद्ध				
ख) पिता-माता के परिवार से संबद्ध				
ग) वैवाहिक रिश्तों से संबद्ध				

3) नीचे दिए गए महापुरुषों को किन रिश्ते-नाते के शब्दों से संबोधित किया जाता है? उनके नाम के सामने संबोधन रूप लिखिए :

नाम	संबोधन रूप
1) जवाहरलाल नेहरू	
2) महात्मा गांधी	
3) कस्तूरबा गांधी	
4) वारेरकर	
5) कामिल बुल्के	
6) सिस्टर निवेदिता	

4) मिलान कीजिए :

1) बहुवचन क्रिया रूप का प्रयोग	1) "ईगो"
2) जिस परिवार में सब एक साथ रहते हों	2) घनिष्ठ संबंध
3) कई रिश्ते-नातों के लिए एक शब्द	3) "आल्टर"
4) जिसके द्वारा रिश्तेदारी का बोध होता है	4) आदरसूचक
5) जो रिश्ते-नाते के शब्द द्वारा अभिव्यक्त होता है	5) समावेशी शब्द
6) प्रथम नाम से पुकारना	6) संयुक्त परिवार

23.4 हिंदी के रिश्ते-नाते की शब्दावली की सांस्कृतिक संरचना

रिश्ते-नाते के शब्द सामाजिक-संगठन के महत्वपूर्ण अंग है। अपने इस महत्व के साथ ही रिश्ते-नाते की शब्दावली का भाषा और समाज के वर्गीकरण को व्यक्त करने में भी सर्वोच्च स्थान है। रिश्ते-नाते की शब्दावली हमें यह भी बताती है कि वर्गीकरण भाषा और समाज का प्राकृतिक गुण है। हम यह तो देखते ही हैं कि भाषा स्वयं विभिन्न इकाइयों या वर्गों में विभाजित होती है — स्वर, व्यंजन, संज्ञाएँ, क्रियाएँ, प्रश्न, विवरण आदि भाषा की ऐसी ही वर्गीकृत इकाइयाँ हैं। इसी भाषा का प्रयोग लोग अपने आस-पास की दुनिया के विविध पक्षों को वर्गीकृत और श्रेणीबद्ध करने के लिए करते हैं।

परंतु समाज में जो लोग भाषा का प्रयोग करते हैं वे भाषा को ठीक उसी तरह नहीं देखते जिस तरह भाषा का व्याकरण लिखने वाले देखते हैं। भाषा का प्रयोक्ता भाषा को वैज्ञानिक ढंग से नहीं, समाज या लोक में प्रचलित मान्यताओं के अनुसार देखता है। यही समाज और संस्कृति का महत्व भाषा के संदर्भ में स्थापित होता है। समाज अपनी संस्कृति के अनुरूप वर्गीकरण की ऐसी व्यवस्था विकसित करता है जिसे हम लोकाश्रित भाषा-व्यवस्था (फ़ोक टेक्सोनॉमी) कह सकते हैं। रिश्ते-नाते की हिंदी शब्दावली की संरचना और उसके प्रयोग के नियम समाज संदर्भित हैं, यह हम अभी-अभी जान-समझ चुके हैं। परंतु ये रिश्ते-नाते पारिवारिक या सामाजिक संरचना में कितने गहरे समाए हुए हैं इसका परिचय हमें तभी मिलता है जब हम रिश्तों-नातों के सामाजिक-सांस्कृतिक कर्तव्यों और दायित्वों तथा अधिकारों और अपेक्षाओं को जानते हैं।

23.4.1 संस्कार, पर्व और रिश्ते-नाते

आपने ध्यान दिया होगा कि हमारे परिवारों में पिता, दादा आदि मुखिया के रूप में स्थान पाते हैं। उनके पैर छूना हमारी संस्कृति में अनिवार्य है, प्रत्युत्तर में हमें उनका आशीर्वाद मिलता है। यह आशीर्वाद भी हमें कई रूपों में मिलता है अर्थात् इनका चयन पात्र के अनुरूप होता है। पुरुषों के लिए खुश रहो, प्रसन्न रहो, जीओ, चिरंजीवी रहो आदि का तथा स्त्रियों के लिए सौभाग्यवती रहो, सुहाग बना रहे, दूधो नहाओ पूतों फलो आदि का प्रयोग होता है। हमारा परिवार बड़े भाई और भाभी को पिता और माँ के बराबर मानकर चलता है क्योंकि हमारे समाज में बड़े भाई और भाभी के आदर्श राम और सीता हैं।

मूल परिवार के संदर्भ में ही देखें तो विवाह के समय पिता अपनी पुत्री का "कन्यादान" करता है। भाई विवाह के समय "लावा परछता" है और भाभियाँ भावी वर या वधू को हल्दी लगाती हैं। अर्थात् विवाह-संस्कार में नातों के कर्तव्य निश्चित, निर्धारित और वर्गीकृत हैं। आपने देखा होगा कि बच्चे के जन्म के छः दिन बाद "छठी की पूजा" बुआ करती है। मुंडन-संस्कार में भी बुआ ही बालों को एकत्रित करती है, और अपने इन कार्यों के लिए वह भाई से "नेग" पाती है। अपने भाई की पुत्री के विवाह में बुआ ही वधू को "सिंदूर दान" करती है। "बुआ" के रिश्ते की संस्कारों में इस अहम् भूमिका के पीछे कारण यह है कि भाई का परिवार बहन का भी मूल परिवार होता है। अपने पैतृक-गृह से उसके संबंध निरंतर बने रहें इसलिए पितृगृह के प्रमुख संस्कारों में हमारा समाज उसकी महत्वपूर्ण भूमिका निश्चित करता है।

वैवाहिक संस्कार में माता के पक्ष से उसके भाई या "मामा" की भूमिका का महत्व है। बहन के पुत्र और पुत्री दोनों के विवाह में "मामा" "इमली घोटाने" की रस्म पूरी करता है। यह भी ध्यान दें कि मामा के अतिरिक्त मातृ कुल के अन्य रिश्तों की कोई भूमिका किसी संस्कार में नहीं होती।

विवाह-संस्कार में "बहनोई" की भूमिका उसके साले के विवाह में दिखाई देती है। "पगड़ी की रस्म" बहनोई ही पूरी करता है।

अंतिम संस्कार में पुत्र या पोता अपने पिता या दादा का दाह-संस्कार करता है। यहाँ एक व्यवस्था और भी है कि यदि किसी का पुत्र और पोता न हो तो उसका नाती (पुत्री का पुत्र) अंतिम संस्कार कर सकता है।

संस्कारों में नातों की ये भूमिकाएँ यह प्रमाणित करती हैं कि हमारे समाज में रिश्ते-नाते के शब्द मात्र नातों को व्यक्त करने वाले शब्द ही नहीं हैं बल्कि हमारी संस्कृति में इनकी जड़ें बहुत गहरे तक फैली हुई हैं। इस बात को कुछ पर्व-त्योहार भी प्रमाणित करते हैं। भाई-बहन के संबंधों को उजागर करने वाले दो पर्व को आप भी जानते ही हैं — रक्षा-बंधन और भाई दूज। पति के स्वास्थ्य और दीर्घ आयु की कामना पत्नी द्वारा की जाती है। इस संदर्भ में कई व्रत-पर्व विवाहित स्त्रियाँ निश्चित महीनों और तिथियों में करती हैं — जैसे करवा चौथ, तीज आदि। यह महत्वपूर्ण है कि इन पर्वों की पृष्ठभूमि में शिव-पार्वती का दाम्पत्य आदर्श या मानक माना जाता है और इन पर्वों पर स्त्रियाँ इन्हीं की पूजा-अर्चना भी करती हैं। पुत्र के मंगल के लिए माताएँ गणेश चौथ और छठ का व्रत रखती हैं। यहाँ भी गणेश और कृष्ण संतान के आदर्श रूप हैं। इस संदर्भ में आप देखिए कि राम-सीता, शिव-पार्वती, गणेश, कृष्ण जैसे पौराणिक चरित्र भी रिश्ते-नाते से संबद्ध इन पर्व-त्योहारों से जुड़ते चले हैं जो इस बात का द्योतक है कि रिश्ते-नातों से बंधी हमारी दुनिया सांस्कृतिक धरातल के भी गहरे संदर्भों से बंधी हुई है। इस प्रकार रिश्ते-नाते की हिंदी शब्दावली परिवार, समाज और संस्कृति को प्रतिबिंबित करने वाला एक दर्पण है। यही कारण है कि रिश्ते-नाते के शब्दों के माध्यम से केवल हमारे नातों का ही बोध नहीं होता बल्कि उन नातों के साथ हमारा आचरण भी प्रभावित होता है अर्थात् रिश्ते-नाते की शब्दावली और नातों की सामाजिक-सांस्कृतिक मान्यताओं के अनुरूप ही भाषा-समुदाय का सदस्य सामाजिक आचरण करता है।

23.4.2 रिश्ते-नाते और सामाजिक आचरण

सामान्यतः आपने देखा होगा कि अपने से एक पीढ़ी ऊपर के नातों को हम आदर-सम्मान देते हैं। इन्हें आदर-सम्मान देने की बात भाषा-प्रयोग द्वारा तो सिद्ध होती ही है, इनके साथ हमारा सामाजिक

आचरण भी इनके प्रति हमारे आदर-सम्मान की भावना को व्यक्त करता है। उदाहरण के लिए, यदि हम बैठे हों और हमारे पिता, दादा, चाचा, मामा या मौसा वहाँ आ जाएँ तो हम तुरंत उठकर खड़े हो जाते हैं। अपने से एक पीढ़ी ऊपर के लोगों का हम चरण-स्पर्श करते हैं या अभिवादन के समय उनके लिए "प्रणाम" का प्रयोग करते हैं। जबकि अपनी पीढ़ी के रिश्तों जैसे भाई, बहन, साला आदि का अभिवादन हम "नमस्ते" द्वारा करते हैं। चरण-स्पर्श या प्रणाम के जवाब में (+पीढ़ी) के लोग जियो, खुश रहो, चिरंजीव हो आदि का आशीर्वाद देते हैं।

जैसा कि पहले भी बताया गया है, भाभी-देवर तथा जीजा-साली के बीच का सामाजिक आचरण उन्मुक्त और मधुर होता है। इनके मध्य के आचरण में हँसी-मज़ाक, अश्लीलता की सीमा तक भी पहुँच सकता है। छोटे भाई की पत्नी का अपने जेठ के प्रति आचरण देवर के प्रति उसके आचरण के सर्वथा विपरीत होता है। जेठ के सामने घूँघट निकालना, उनसे या उनके सामने बात न करना छोटे भाई की पत्नी के सामाजिक आचरण का ही परिणाम है।

बुआ, ताऊ/चाचा की तुलना में मामा और मौसी के साथ हमारा आचरण अधिक उन्मुक्त और स्वतंत्र होता है। इसी प्रकार सामान्यतः पिता के साथ हमारा आचरण औपचारिक होता है और माँ के साथ अनौपचारिक और आत्मीय। इसका सबसे बड़ा प्रमाण इन दोनों के लिए प्रयुक्त मध्यम पुरुष सर्वनाम है। पिता को हम सदैव "आप" द्वारा ही संबोधित करते हैं जबकि माँ के लिए "तुम" और "कभी-कभी" "तू" का प्रयोग करने में भी हमें झिझक महसूस नहीं होती।

23.5 रिश्ते-नाते के शब्दों का संबोधन रूप में प्रयोग

इस इकाई के प्रारंभ में ही इस बात की ओर संकेत किया गया था कि हिंदी के रिश्ते-नाते के शब्दों का प्रयोग संबोधन-शब्दावली के रूप में भी हिंदी भाषा समाज करता है। प्रसिद्ध समाजभाषावैज्ञानिक हाइम्स (Hymes) ने भी कहा था कि रिश्ते-नाते के शब्द संबोधन के रूप में प्रयुक्त होकर अर्थ का एक नया और स्पष्ट स्वरूप हमारे सामने प्रस्तुत करते हैं। यदि हम हिंदी के रिश्ते-नाते की शब्दावली का संबोधन के रूप में प्रयोग को देखें तो यह निःसंकोच कह सकते हैं कि हिंदी के सभी रिश्ते-नाते के शब्द अनिवार्यतः संबोधन-शब्द नहीं हैं। परंतु रिश्ते-नाते के शब्द संबोधन शब्दों के रूप में प्रयुक्त किए जाते हैं, इसमें संदेह नहीं। यहाँ इस स्थिति को देखा जा सकता है, जैसे : हिंदी में कई रिश्ते-नाते के शब्द ऐसे हैं जिनका उसी रूप में संबोधन-शब्द के रूप में प्रयोग किया जाता है। संबोधन के रूप में प्रयोग करते समय कुछ रिश्ते-नाते के शब्दों के साथ "जी" या "साहब" लगाया जाता है। हिंदी में जिन रिश्ते-नातों के शब्दों को ही संबोधन-शब्द के रूप में प्रयुक्त किया जाता है, वे निम्नलिखित हैं :

माता (जी), पिता (जी), भाई (साहब), बहू, भाभी, दादा (जी), दादी (जी), नाना, नानी, ताऊ (जी), ताई, चाचा, चाची, बुआ, फूफा, मामा, मामी, मौसा, मौसी आदि।

बेटा, बेटी, छोटे भाई, छोटी बहन, पोता, पोती, नाती, नातिन, देवर, छोटे साले आदि को उनके नाम से संबोधित किया जाता है।

कभी-कभी नाम के साथ रिश्ते-नाते के उपयुक्त शब्द को जोड़कर संबोधित करने की व्यवस्था भी हिंदी-भाषा समाज में है जैसे — दिलीप चाचा, रमेश भाई साहब, शोभा दीदी, गीता चाची प्रकाश मौसी, दिनेश मामा आदि।

यह ध्यान देने की बात है कि रिश्ते-नाते की शब्दावली के संबोधन रूप के प्रयोग में आयु महत्वपूर्ण घटक है। आयु ही रिश्ते-नातों के लिए संबोधन-रूप के चयन का आधार भी बनती है। (-पीढ़ी) के रिश्तों को सदैव उनके नाम से संबोधित किया जाता है, उनके लिए निर्धारित रिश्ते-नाते के शब्द द्वारा नहीं। (+पीढ़ी) के नाते जो आयु में भी वक्ता से बड़े हैं, उनके लिए संबोधन रिश्ते-नाते के शब्द ही बनते हैं। (+पीढ़ी) के नाते से संबद्ध लोग (-पीढ़ी) से संबद्ध लोगों को उनके नाम से ही पुकारते हैं। इस प्रकार आयु-भेद रिश्ते-नाते की शब्दावली के संबोधन-शब्द के रूप में प्रयोग का सबसे महत्वपूर्ण सामाजिक घटक है।

23.5.1 रिश्ते-नाते और संबोधन का सामाजिक संदर्भ

हमारे समाज में आज भी कुछ रूढ़ियाँ ऐसी हैं जो हमारे भाषा-व्यवहार को नियंत्रित करती हैं। यह तो आप जानते ही होंगे कि परंपरावादी परिवारों में पति अपनी पत्नी को और पत्नी अपने पति को नाम लेकर नहीं पुकारते। अतः आपस में एक-दूसरे को संबोधित करने के लिए ये दोनों ऐ जी!, देखो जी!, कहो जी!, सुनो जी!, सुनते/सुनती हो!, मैं कहती हूँ, जैसी अभिव्यक्तियों का प्रयोग करते हैं।

यदि पति-पत्नी बेटा-बेटी वाले हैं तो आपस में एक-दूसरे को संबोधित करने के लिए वे इनके नाम का सहारा भी लेते हैं जैसे — लीला की माँ या मोहन के बाबू आदि।

पत्नी द्वारा पति के लिए "प्राणनाथ" और पति द्वारा पत्नी के लिए "प्राणप्यारी" का संबोधन मौखिक व्यवहार में तो नहीं लेकिन लिखित-व्यवहार में, विशेष रूप से एक-दूसरे को पत्र लिखते समय हमें दिखाई देता है।

यह तो हमने देखा ही कि किसी अनजान व्यक्ति के लिए भी उसकी आयु और लिंग के अनुसार हम रिश्ते-नाते के शब्दों द्वारा उसे संबोधित करते हैं।

सामाजिक संदर्भ की दृष्टि से यह भी महत्वपूर्ण है कि जब एक ही नाते से जुड़े एकाधिक व्यक्ति होते हैं तो उन नातों के शब्द के साथ "बड़े", "मझले" और "छोटे" उपसर्ग लगाकर उन्हें संबोधित किया जाता है जैसे बड़े भैया, मंझली दीदी, छोटे मामा आदि।

हिंदी की रिश्ते-नाते की शब्दावली का संबोधन के रूप में प्रयोग के अलावा हमें यह भी जानना चाहिए कि हिंदी में कई रिश्ते-नाते के शब्द ऐसे भी हैं जिनका प्रयोग संबोधन-शब्द के रूप में नहीं किया जाता। ससुर, जेठ, भतीजा, भतीजी आदि इसी प्रकार के शब्द हैं। ससुर को पिताजी, बाबूजी, पापा द्वारा और जेठ को भैया, भाई साहब द्वारा संबोधित किया जाता है। भतीजा-भतीजी सदैव अपने प्रथम नाम से संबोधित किए जाते हैं। "पोता" भी संबोधन शब्द नहीं बनता।

23.5.2 देवी-देवताओं के लिए रिश्ते-नाते की शब्दावली का संबोधन रूप में प्रयोग

रिश्ते-नाते की हिंदी शब्दावली का प्रयोग देवी-देवताओं को संबोधित करने के लिए भी किया जाता है। आप स्वयं देख सकते हैं कि हम सभी पूज्य देवियों को "माँ" द्वारा संबोधित कर सकते हैं। तभी तो हमें माँ दुर्गा, अम्बे, जगदम्बे, जगत्-जननी जैसे प्रयोग भक्त-जनों के बीच सुनाई देते हैं। इसके अन्य उदाहरण भी लिए जा सकते हैं जहाँ आराध्य देवी के नाम के साथ "माता" जोड़कर ही उन्हें संबोधित किया जाता है जैसे दुर्गा माता, काली माता, शीतला माता आदि। इन देवियों के नाम के पहले "माँ" जोड़कर भी इन्हें संबोधित किया जाता है जैसे माँ दुर्गा, माँ काली, माँ शीतला आदि।

परंपरावादी हिंदी समाज में कुछ ऐसे विश्वास हैं जिनके कारण कुछ वस्तुओं को हम दैवी या पारलौकिक शक्ति से संपन्न मानने लगते हैं। इन सबके साथ "माता" का प्रयोग हमारे इस विश्वास की धारणा को प्रमाणित भी करता है जैसे तुलसी (माता), गऊ(माता), धरती (माता), विद्या (माता), गंगा (माता) आदि। हिंदी में "माता" के इस व्यापक प्रयोग को देखते हुए मिशेल (1975) जैसे पाश्चात्य भाषा-वैज्ञानिक को यह कहना पड़ा कि एक शब्द का इतने सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भों में प्रयोग संभवतः विश्व की किसी भी भाषा में मिल पाना कठिन ही है।

इसी संदर्भ में समस्त रिश्ते-नाते की शब्दावली को एक तुलनीय स्तर पर भी देखा जा सकता है। यह तो सभी विद्वान मानते हैं कि भाषा अपने समाज की होती है और सामाजिक भेद भाषाओं में भेद ले आते हैं। साथ ही यह भी महत्वपूर्ण है कि भिन्न-समुदाय का व्यक्ति या स्वयं वह समाज अपने आस-पास फैले बाह्य-जगत को भिन्न रूप में देखता और संगठित करता है। अतः भिन्न भाषाएँ एक ही संकल्पना या संदर्भ को अपनी भाषा में भिन्न-भिन्न ढंग से व्यक्त करती हैं। यहाँ अंग्रेज़ी और हिंदी की रिश्ते-नाते की शब्दावली पर एक तुलनात्मक दृष्टि डालें तो यह स्पष्ट होगा कि कौन-सी भाषा कैसे अपनी दुनिया को अपने भीतर ढालती और व्यक्त करती है तथा कैसे उसे सामाजिक-अर्थवत्ता प्रदान करती है। क्योंकि यही वह तत्व है जो भाषा को सामाजिक धरातल पर बाधित और नियंत्रित करता है।

1) निम्नलिखित संस्कारों/रस्मों में किन संबंधियों की भूमिका होती है:

संस्कार/रस्म	संबंधी
1) कन्यादान	1) मामा
2) वर/वधू को हल्दी लगाना	2) पुत्र
3) बच्चे की छठी की पूजा	3) भाभी
4) इमली घोटाने की रस्म	4) बहनोई
5) पगड़ी की रस्म	5) माता-पिता
6) अंतिम संस्कार	6) बुआ

2) 7-8 पंक्तियों में अंतर स्पष्ट कीजिए :

1) सयुक्त परिवार तथा सीमित परिवार

....
....
....
....
....
....
....
....

2) व्यापक शब्दावली तथा सीमित शब्दावली

....
....
....
....
....
....
....
....

3) औपचारिक संबंध तथा अनौपचारिक संबंध

....
....
....
....
....
....
....
....

4) "ईगो" की संकल्पना तथा "आल्टर" की संकल्पना

....
....
....
....

....

....

....

....

23.6 सारांश

यह तो आपने जान ही लिया कि हिंदी की रिश्ते-नाते की शब्दावली की सामाजिक संबद्धता अंग्रेज़ी की रिश्ते-नाते की शब्दावली से कहीं अधिक गहरी है। और यह भी कि अंग्रेज़ी की रिश्ते-नाते की शब्दावली उतनी वर्गीकृत नहीं है जितनी कि हिंदी की। यहाँ सारांश में इस तुलना को निम्नलिखित रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है :

- अंग्रेजी-भाषा समाज सीमित परिवार की संकल्पना से जुड़ा है और हिंदी-भाषा समाज संयुक्त परिवार की संकल्पना से। इसीलिए हिंदी-भाषा समाज प्रत्येक नाते को महत्व देते हुए उनके लिए भिन्न रिश्ते-नाते के शब्द का प्रयोग करता है।
- हिंदी में लगभग सभी नातों के लिए शब्द हैं। सीमित परिवार की संकल्पना से जुड़े समाज सभी नातों को भिन्न शब्द द्वारा व्यक्त करने की आवश्यकता महसूस नहीं करते। यही कारण है कि हिंदी के रिश्ते-नाते की शब्दावली को हम व्यापक शब्दावली (ब्रॉड रेंज टर्मिनॉलजी) और अंग्रेज़ी के रिश्ते-नाते की शब्दावली को सीमित शब्दावली (नैरो रेंज टर्मिनॉलजी) कहते हैं।

  ऐसा होने का प्रमाण यह है कि अंग्रेज़ी भाषा भिन्न नातों को एक ही शब्द के माध्यम से व्यक्त करती है, और हमें उस शब्द की व्याख्या करके नातों की पहचान करनी पड़ती है। जैसे, "अंकल" = फ़ादर्स ब्रदर (चाचा/ताऊ), मदर्स ब्रदर (मामा), मदर्स सिस्टर्स हस्बैंड (मौसा) आदि।
- हिंदी में प्रत्येक नाते के लिए भिन्न शब्द तो हैं ही, उनके उच्चारण के ध्वन्यात्मक विकल्प (फ़ोनोलॉजिकल वेरिएशन) भी समाज में मिलते हैं। जैसे—चाचा-चच्चा-चाचू, माताजी—माँ-मांजी-माई-अम्मा, मामा—मम्मा, मामूजान, मामू आदि।
- इसके साथ ही हिंदी के रिश्ते-नाते की शब्दावली में (+पीढ़ी) का व्यक्ति आदर-सम्मान पाता है जो उसके लिए प्रयुक्त सर्वनाम (पिता के लिए "आप", भाई के लिए "तुम", भतीजे के लिए "तू") के माध्यम से और क्रिया के एकवचन या बहुवचन के रूप में प्रयुक्त होने से सिद्ध होता है। अंग्रेज़ी में यह आदर-भाव व्यक्त नहीं होता। वहाँ माँ, बेटा, पिता, मामा, भतीजा—सभी एक-दूसरे के लिए सर्वनाम 'You' का प्रयोग करते हैं। आदर के संदर्भ में वह/वे जैसा प्रयोग भी अंग्रेज़ी में 'He' तक सीमित है।
- हिंदी-भाषा समाज में प्रत्येक रिश्ता एक विशेष प्रकार के सामाजिक-आचरण की अपेक्षा रखता है। भाभी के साथ (देवर के संदर्भ में) या साली के साथ (जीजा के संदर्भ में) यह आचरण सामाजिक संरचना का उद्घाटक है जबकि अंग्रेज़ी में तो इनकी अभिव्यक्ति के लिए भिन्न शब्द भी नहीं हैं। "सिस्टर-इन-लॉ" और "ब्रदर-इन-लॉ" जैसे समावेशी शब्दों में ही इन रिश्तों की मिठास गुम हो गई है।
- जिस प्रकार सामाजिक-संरचना की विशिष्टता को अंग्रेज़ी की रिश्ते-नाते की शब्दावली प्रदर्शित नहीं कर पाती उसी प्रकार विभिन्न पारिवारिक संस्कारों से भी वह असंबद्ध रहती है। विवाह में पिता, भाई, बुआ, मामा की भूमिका हमारे नातों की मज़बूती को सिद्ध करती है।
- यही बात संस्कृति से इनकी संबद्धता के विषय में भी कही जा सकती है। हिंदी-भाषा-समाज प्रकृति को भी रिश्ते-नातों में बांध लेता है। तभी वह तुलसी (पौधा), गऊ (पशु) और गंगा (नदी) को "माता" कह पाता है। अंग्रेज़ी भाषा इस प्रकार की सांस्कृतिक संबद्धता से शून्य है।
- यही बात एक सीमा तक रिश्ते-नाते के शब्दों को संबोधन-शब्द के रूप में प्रयोग के विषय में भी कही जा सकती है। परंतु यहाँ अंग्रेज़ी में कुछ प्रयोग हमें मिल जाते हैं जैसे — अंकल, आंटी,

सिस्टर (नर्स के लिए), फ़ादर (चर्च के पादरी के लिए) । परंतु ये प्रयोग अति-औपचारिक और सीमित हैं। हिंदी में रिश्ते-नाते की शब्दावली के संबोधन के रूप में प्रयोग के कई स्तर और रूप हैं।

- अंग्रेज़ी-भाषा समाज मूल रिश्तों के अतिरिक्त अन्य रिश्तों को महत्त्व नहीं देता। वहाँ मामा, चाचा, मौसा, जीजा, साला, ससुर, नाती, पोता के लिए भिन्न-भिन्न शब्द नहीं हैं। तब उसमें समधी, समधिन, ममिया ससुर जैसे नातों का कोई स्थान न होना आश्चर्य का विषय नहीं है।

इसका एकमात्र कारण यह है कि अंग्रेज़ी-भाषा-समाज में रिश्ते-नाते के शब्दों का प्रयोग मात्र औपचारिक निर्वाह के लिए किया जाता है, जबकि हिंदी-भाषा समाज में रिश्ते-नाते के शब्द जीवन का एक हिस्सा बनकर व्याप्त हैं।

23.7 शब्दावली

इस इकाई में आपको निम्नलिखित विशिष्ट शब्दावली की जानकारी मिली :

समाजीकरण	**आर्थी संगठन**
स्तरभेद	**पारिवारिक संरचना**
भाषा समुदाय	**सामाजिक उपादान**
सामाजिक आचरण	**भाषेतर उपादान**
भाषा व्यवहार	**घटक**
सामाजिक इकाई	**संयुक्त परिवार**
सार्वभौमिक शब्दावली	**सीमित परिवार**
रिश्ते-नाते की शब्दावली	**आधुनिकीकरण**
संगठन	**समावेशी शब्द**
विश्लेषण	**भाषा निरपेक्ष**
सामाजिक संरचना	**ईगो**
आल्टर	**वर्गीकृत इकाइयाँ**
समाज संदर्भित	**भाषा समाज**
परंपरावादी समाज	**संबोधन शब्द**
सामाजिक मान्यताएँ	**संकल्पना**

23.8 कुछ उपयोगी पुस्तकें

हिंदी का सामाजिक संदर्भ (1984), सं. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव तथा रमानाथ सहाय, के. हि. सं. आगरा।

23.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

अभ्यास 1

1) i) √, ii) ×, iii) √, iv) √, v) ×, vi) ×

2) क) दादा, पिता
बहन, पोता

ख) मामा, चाची,
फूफा, मौसी

ग) ननद, जेठ
साली, साढू

3) 1) चाचा, 2) बापू, 3) बा, 4) मामा, 5) फ़ादर (पिता), 6) सिस्टर (बहन)

4) 1) 4, 2) 6, 3) 5, 4) 1, 5) 1, 6) 2

अभ्यास 2

1) 1) 5, 2) 3, 3) 6, 4) 1, 5) 4, 6) 2

2) इकाई से जाँच करें।